नज़रिया

105 वहदतुल वजूद

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफें अल्लाह तआला के लिए हैं। जो सारे जहान का पालन हार है। हम उसी से मदद मांगते और माफी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल० पर, आपकी आल व औलाद और असहाब रजि० पर।

व बअद!

'वहदतुल वजूद' तसव्वुफ का सबसे मुश्किल व संगीन मसअला है। इस नजरिये को इल्मी सतह पर पूरी कूवत और शिद्दत के साथ पेश करने और उसकी तन्जीम व तरतीब का सेहरा मुहियुद्दीन इब्ने अरबी के सर है। उन्होंने 'फतूहाते मक्किया' और 'फुसुसुल हकम' किताबों में इसके जो नुकात बयान किये हैं, उनके मुतालेअ से सादा तौर पर जो बात समझ में आती है। वह यह है कि "उनके नज़दीक **'वजूद'** सिर्फ एक है और वह अल्लाह की जाते मुतलक है। कायनात और उसमें पाई जाने वाली तमाम चीज़े उसके मज़ाहिर हैं और वही उनमें ज़ाहिर व नुमायां है। तमाम मौजूदात उसी के अस्मा व सिफ़ात का ज़हूर हैं। उनकी तख़लीके खारजी के मआनी अल्लाह के उन की सूरत में तजल्ली व तमसील या जहूर फरमाने के हैं। **(फुसुसुल हकम–सफ़ा–322)** 'वहदतुल वजूद' के इस नज़रिये का बानी आम तौर पर शैख़ इब्ने अरबी को माना जाता है। उनकी किताब 'फुसुसुल हकम' इस बारे में आख़िरी सनद है। लेकिन ऐसा समझना पूरी तरह सही नहीं है। क्योंकि प्रोफ़ेसर युसुफ सलीम चिश्ती ने अपनी किताब 'तारीख़े तसव्वुफ' में हज़रत जुनैद बग़दादी के 21 रसाइल का तफसीली तआरूफ कराया है। जिनसे पता चलता है कि इस नज़रिये की दागबैल डालने वाले असल में जुनैद बग़दादी हैं और इसकी तश्कील व तन्जीम बाद में इब्ने अरबी के ज़रिये हुई। जुनैद बग़दादी ने तौहीद के चार मरातिब बयान किये हैं–

(1) तौहीदे अवाम (2) तौहीदे उलैमा
(3) तौहीदे ख़्वास (4) तौहीदे ख़ास अल ख़्वास

जुनैद ने 'अवाम व उलैमा ए ज़ाहिर की तौहीद को अदना दर्जे की तौहीद क़रार दिया। क्योंकि उनके ख़्याल में अल्लाह की वहदानियत का इक़रार और बग़ैर इल्म के उसके मअबूद होने का एतेक़ाद अवाम की तौहीद है जो शक व शुब्हात से पाक नहीं। इसी तरह उलैमा ए ज़ाहिर की तौहीद जो सही एतेक़ाद और इल्मी दलील से होती है, अक़्ल को बीच में लाने की वजह से हक़ीक़ते तौहीद हिजाब में रहती है। अक़्ल चूंकि मख़्लूक है और एक मख़लूक किसी मख़लूक की तरफ ही रहनुमा हो सकती है। अल्लाह पर उसकी सनअत (मख़लूक) से दलील नहीं ली जा सकती । क्या तुमने किसी नई पैदा शुदा चीज को देखा है जो पूराने ज़माने का पता दे।" **(तआरूफ अल मज़हब अहले तसव्वुफ़–सफा–63)**

अली हजवेरी (दाता गंज बख़्श) ने हज़रत जुनैद बग़दादी के एक क़ौल का यह मतलब बयान किया है "तौहीदे हक़ीक़ी में इन्सानी सिफात बाक़ी ही नहीं रहती। क्योंकि इन्सानी सिफात मुस्तक़िल नहीं, महज रूसूम हैं। आरज़ी है जैसे आईने में अक्स होता है। फाअिले हक़ीक़ी सिर्फ अल्लाह है। "प्रोफेसर युसुफ सलीमचिश्ती कहते हैं कि "जुनैद ने इस बात की सराहत भी की है

कि अल्लाह की सिफात व अफ़आल सब उसकी जात में दाखिल हैं। जब सालिक तौहीद के अअला मकाम पर होता है तो उसे यह मालूम हो जाता है। फिर वह खुद भी पूरी तरह अल्लाह की जात में जज़्ब हो जाता है।"
(तारीख़ तसव्वुफ़–सफ़ा–237)
जुनैद बगदादी के इन ख़्यालात से पता चलता है कि 'वहदतुल वजूद' के नज़रिये की बुनियाद उनके दौर (215 से 298 हिजरी) में पड़ चुकी थी। जुनैद के शार्गिद हुसैन बिन मन्सूर हल्लाज ने 'अनल हक़' का नारा लगाया। जिसकी पादाश में 309 हिजरी में उसे फांसी दी गई। प्रोफ़ेसर चिश्ती ने हल्लाज की किताब **'किताबुत्तव्वासीन'** से उसका यह कौल नकल किया है "मैं वही तो हूँ। जिसे मैं चाहता हूँ या जिससे मुहब्बत करता हूँ और वोह जिससे मुझे मुहब्बत है, मैं हूँ हम दो रूहें हैं जो एक जिस्म में रहती हैं। अगर तू मुझे देखता है तो गोया उसे देखता है और अगर तू उसे देखता है तो हम दोनों को देखता है।" **(तारीख़ तसव्वुफ़–सफ़ा–265)**
इस नजरिये के मानने वाले इस्त बात पर मुत्तफ़िक हैं कि कायनात में सिर्फ अल्लाह मौजूद है और बाकी तमाम चीज़ों का वजूद महज़ ख़्याली और वहमी है। सिर्फ इब्ने अरबी और शैख़ अहमद सर हिन्दी ने इस मसअले पर जो कुछ लिखा है, अगर सिर्फ उसी को जमा किया जाए तो एक मोटी किताब तैयार हो जाए।
'वहदतुल वजूद' का सादा सा तआरुफ यह है कि 'सालिक' राहे सुलूक में तरक्की करता हुआ आगे बढ़ता रहता है। यहां तक कि वह 'मकामें फ़ना' में पहुंच कर 'फ़ना फ़िल्लाह' हो जाता है। उसका पहला वजूद ख़त्म हो जाने पर अल्लाह उसे वजूद अता करता है और दुबारा अपनी ज़ात से अलग करके दुनिया में लौटा देता है। इस तरह वह 'बाकी बिल्लाह' हो जाता है। इसी तरह वजूद के लिहाज़ से एक मकाम को वोह 'जमअ अल जमअ' कहते हैं। इस मकाम में अल्लाह के सिवाए कोई मौजूद ही नहीं रहता। यहां वह खुद ही आबिद है और खुद ही मअबूद।
अबुल कासिम कशीरी के बकौल 'जमअ अल जमअ' मुकम्मल तौर पर नेस्त नाबूत हो जाने और ग़लबा ए हकीकत के वक्त अल्लाह के सिवा हर चीज़ के एहसास से फना हो जाने का नाम है।"
(रिसाला कशीरिया–सफ़ा–45)
बहरहाल यह इस फ़लसफ़े 'वहदतुल वजूद' का इजमाली खाका है, जो मौजूदा तसव्वुफ़ की जड़–बुनियाद है। इसी पर 'तसव्वुफ़' की पूरी इमारत बनाई गई और एक पूरा 'फ़न' तरतीब दिया गया।
यह फलसफा चूंकि हकाइक पर मबनी नहीं। सिर्फ ओहाम पर यह इमारत खड़ी की गई है। इसलिए इसमें तजाद का होना लाजिमी है। एक तरफ इब्ने अरबी की इत्तेबाअ करने वाले तमाम सूफ़िया 'सिफाते इलाही' के बारे में कहते हैं कि वह ज़ात से अलग नहीं बल्कि उसमें दाख़िल है और दूसरी तरफ वोह ज़ात, सिफात और अफ़आल की तीन अलग–अलग किस्में बयान करते हैं और हर एक के अहकाम भी अलग–अलग बतलाते हैं। इब्ने अरबी ने जन्नत की भी तीन किस्में बयान की हैं। हूरों वाली जन्नत को 'जन्नते अफ़आल' करार दिया। जो उनके मुताबिक़ घटिया दर्जे की जन्नत है। 'रिज़वानुल्लाह को 'जन्नते सिफात' कहा और रूह की जन्नत को 'जन्नते ज़ात' नाम दिया।
यह शैखे अकबर अपनी किताब 'फुसुसुल हकम' में इस बात पर ज़ोर देते हैं कि 'हकाइक' कश्फ, एतेकाद और कौल के ताबेअ हैं। "यानि इन्सान जो चाहे एतेकाद रखे, जो चाहे कहे और जो चाहे करे सब का वजूद है और हर वजूद चूंकि अल्लाह ही है इसलिए नेकी व बुराई और अज़ाब व

सवाब में फर्क करना अल्लाह में फर्क करना है। 'हुलूली सूफिया' के मुताबिक खालिक अपनी हर मखलूक में खुद समाया हुआ है। उन का मानना है कि कायनात में अल्लाह के सिवा किसी दूसरी ज़ात या चीज़ का वजूद नहीं है। अल्लाह एक अम्रे कुल्ली है जिसका अलग से कोई ज़ाती वजूद नहीं है, वह सिर्फ अपनी जुज़यात में पाया जाता है।

इब्ने अरबी 'फतूहाते मक्किया' में लिखते हैं "पाक है वह ज़ात जिसने चीज़ों को पैदा किया और खुद ऐन अशया रहा।" और 'फुसुसुल हकम' में लिखा कि "ऐ चीज़ों को पैदा करने वाले और खुद उनमें शामिल रहने वाले! यकीनन तू अपनी मखलूक में खुद मिला हुआ है। तू जो चीज़ पैदा करता है, वह तेरी ज़ात में शामिल है।" इसी किताब में यह भी लिखा कि "अल्लाह के बारे में लोगों के मुख्तलिफ अकीदे हैं और मैं उन सब अकीदों का हामिल हूँ।"

इब्ने अरबी ने अपने अकीदे के मुताबिक कुरआन की तफ्सीर भी लिखी है। जिसमें आयत "वत्त ख़ ज़ल्ललाहु इब्राहीमा ख़लीला" की तफ्सीर वह यह करते हैं कि "अल्लाहतआला जब किसी बन्दे की ज़ात में शामिल हो जाता है तो ज़ाहिर में वह बन्दा बन्दा ही रहता है लेकिन बातिन में वह अल्लाह हो जाता है। यह शामिल होना ऐसा ही है जैसे बसारत, समाअत और हरकत। यह सुनना, देखना, जज़बात और एहसासात सब दर हकीकत अल्लाह ही के नाम है।"

"अफा राअयता मनित तख़ज़ा इलाहहु हवाहु" की तश्रीह में लिखतें हैं "ख़्वाहिशे नफ़्सानी ही सबसे बड़ा मअबूद है। क्योंकि किसी भी चीज़ की इबादत अल्लाह की इबादत से अलग नहीं और अल्लाह की इबादत ख़्वाहिशे नफ़्सानी के ज़रिये की जा सकती है।" शैख़ आगे चल कर यह तक लिख गए कि "यह कुत्ते और सूअर ही तो हमारे मअबूद हैं, अल्लाह तो गिरजे में पादरी बना बैठा है।" **(तसव्वुफ-बहवाला नवाए इस्लाम-सफा-15-जौलाई-1990 ईस्वी)**

इब्ने अरबी ने 'अल्हम्दुलिल्लाह' की यह तश्रीह की कि "यह पूरी कायनात मय इन्सानों के अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात ही की तफ़्सीलात हैं। इसलिए हकीकत में अलग से न कोई हामिद है और न आबिद! बल्कि वह खुद ही हामिद भी है और महमूद भी, आबिद भी है और मअबूद भी।" **(तफ्सीर इब्ने अरबी-सफ़ा-13)** इसी तरह "यूमिनू न बिल ग़ैब" की तफ़्सीर में ईमान की दो किस्में बयान की और इसे अदना दर्जे का ईमान करार दिया।"

सूरह बकराह के आख़िरी रूकूअ के "गुफ़रान क रब्बना व इलैकल मसीर" यानि ऐ हमारे रब! हम अपनी ख़ताओं की माफ़ी चाहते हैं और हमें तेरी तरफ लौटना है।" की यह तावील करते हैं "हमारे वजूद और हमारी सिफात की मग़फिरत फरमा और हमारे वजूद और हमारी सिफात को अपने वजूद और अपनी सिफात से ढ़ाप ले, अपने अन्दर हमें फना करके" "वग़फिरलना" की यह तावील करी "हमारे वजूद के गुनाह बख़्श दे। इसलिए कि हमारा वजूद ही सबसे बड़ा गुनाह है।" "वरहम्ना" के बारे में लिखा कि "हम पर रहम कर फना के बाद एक नया वजूद अता करके" और "वन्सुरना अलल कौमिल काफिरीन" की यह तश्रीह की "हमारी मदद कर, हमारे नफ्से अम्मारा की कूवतों और उनकी सिफात के मुकाबले में और शैतानों व ओहाम के लश्करों के मुकाबले में। जो मुझ से महजूब हैं और अपने कुफ्र व ज़ुल्मत की वजह से हमारे लिए हिजाब में है। "सूरह निसा-आयत-31 "इनतज तनिबु कबाइरा मातुन्हौना अन्हु "यानि "अगर तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहे, जिनसे तुम्हें मना किया जा रहा है की यह तावील की कि अगर तुम बचते

रहे गैरुल्लाह के वजूद को मानने से , जो कि शिर्क है। इसलिए कि सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह के वजूद के अलावा किसी गैर के वजूद को मानना है।" **(तफ्सीर इब्ने अरबी–सफा–71)** इब्ने अरबी ने यह भी कहा कि "जाते इलाही एक ऐसी वहदत है कि उस पर उसकी सिफात को मानना भी शिर्क है।" एक तरफ़ गैरुल्लाह के वजूद को मानने को शिर्क क़रार देना और दूसरी तरफ़ इन्सान के वजूद को सबसे बड़ा गुनाह बतलाना यह हिमाकत और खुला तज़ाद नहीं तो फिर क्या है? ऐसा लगता है कि जनाब 'मुअतज़ली' थे। उन्होंने तसव्वुफ़ का लबादा ओढ़ कर एतेज़ाल की तब्लीग़ की है। आप अल्लाह के रसूल सल्ल0 का कितना अदब करते हैं? यह सूरह आले इमरान–आयत–31 "यग़फिर लकुम ज़ुनु बकुम" यानि "वह तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा" की तावील में देखिये" "अल्लाह तुम्हारे अगले व पिछले गुनाह बख़्श देगा। उनका अगला गुनाह उनकी जात थी और पिछला गुनाह उनकी सिफ़ात।" नबी सल्ल0 की ज़ात व सिफ़ात को गुनाह क़रार देने की जुराअत क्या कोई मुसलमान भी कर सकता है? ऐसे शख़्स को जो लोग अपना बुज़ुर्ग और 'शैखे अकबर' मानते हैं और उसकी तालीमात पर जान छिड़कतें है। क्या ऐसे गुमराह लोगों को "औलिया अल्लाह" समझा या कहा जा सकता है? यह जनाब अपनी तफ़्सीर में "यौमुल हिसाब" और "यौमिददीन" को 'क़यामते सुग़रा' यानि 'छोटी क़यामत' का नाम देते हैं और 'क़यामते कुबरा यानि 'बड़ी क़यामत से मुराद 'सालिक' का मक़ामें फ़ना में पहुंच जाना और 'फ़ना फ़िल्लाह' हो जाना बतलाते हैं।

इसी तरह उनके नज़दीक "इज़श्शम्सु कुव्विरत" में शम्स से मुराद रूह का सूरज है और कुव्विरत से मुराद रूह का जिस्म से निकल जाना है।

इन ख़िलाफ़े शरीअत और मनमानी तावीलात को कुरआन की असल तालीमात बताया जाता है और इस फलसफ़याना तसव्वुफ को क़ुरआनी तसव्वुफ कहा जाता है। जुज़वी इख़्तिलाफ़ के साथ तमाम वजूदी सूफ़िया की किताबों में यह तालीमात मिलती हैं। ख़्वाह वोह 'वहदतुल वजूद' के क़ायल हो या 'वहदतुश्शहूद' के

एक और सूफ़ी बुज़ुर्ग 'सुल्तानुल आशिक़ीन' इब्ने फ़ारिद हैं। इन्होंने तक़रीबन 800 अशआर का एक क़सीदा लिखा है। जिसमें लिखते हैं कि "अरब की मशहूर माशूकाएं लैला, लुबना, बुशयना और अज़्ज़ा वग़ैरह यह सब जाते इलाही हैं। अल्लाह ही ने इन फ़ानी माशूक़ाओं की शक्ल इख़्तियार कर ली थी। इसी तरह इन चारों के आशिक़ कैस, जमील, कसीर और आमिर भी अल्लाह ही की जात हैं। क्योंकि अल्लाह उनकी सूरत में जलवा गर हुआ था।"

सूफ़ियों के एक और बुज़ुर्ग जो 'हेकल ए समदानी' के लक़ब से पुकारे जाते हैं, अब्दुल वहाब शअरानी हैं। इन्होंने बहुत सी किताबें लिखी हैं। 'तबक़ाते कुबरा' इनकी मशहूर किताब है। इस किताब में सूरह युनुस–आयत–62 "अलाइन्ना औलिया अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन अलैहिम वला हुम यह ज़नून" की तफ़्सीर में अपने पीरे तरीक़त 'इब्राहीम दसौती' का यह क़ौल नक़ल करते हैं "जो अल्लाह के औलिया ख़ौफ़ व ग़म से महफ़ूज़ हैं, वोह अल्लाह से मिले रहते हैं और उससे सरगोशी भी कर लेते हैं। जैसा कि मूसा अलैहि0 कर लिया करते थे। मैं और दूसरे अल्लाह के औलिया अज़ल में अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 के सामने मौजूद थे। अल्लाह ने मुझे मुहम्मद सल्ल0 के नूर से पैदा किया और हुक्म दिया कि सारे औलिया को ख़लअत पहना। मैंने हुक्म की तामील की। फिर रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया इब्राहीम! तू इन सबका सरदार है। उस वक़्त मैं था,रसूल सल्ल0 थे। भाई अब्दुल क़ादिर जीलानी

मेरे पीछे थे और सय्यद अहमद कबीर उन के पीछे। आप सल्ल0 ने मुझ से मुखातिब हो कर फ़रमाया–इब्राहीम! तू मालिक (दारोग़ा ए जहन्नम) के पास जा कर हुक्म दे कि आग को बन्द कर दे और "रिज़वान" (दारोग़ा ए जन्नत) से जाकर कह कि जन्नत के दरवाज़े खोल दे। चुनांचे मै दोनों के पास गया और दोनों ने उस हुक्म की तामील की।" (ध्यान रहे यह बे सिर पैर की रिवायत सिर्फ अपने ऊंचे मर्तबे के बखान के लिए गढ़ी व लिखी गई।) बा यज़ीद बुस्तामी जिन्हें सुफ़िया 'सुल्तानुल अ़रिफ़ीन' के लकब से याद करते हैं। यह बयान करते हैं कि "एक दफ़ा मैं हज के इरादे से चला। रास्ते में मुझे एक कुतुब मिले। उन्होंने कहा बुस्तामी। तू हज को क्यों जा रहा है? जा घर वापिस चला जा। तुने दिल की आंखों से अल्लाह को मेरी जात में देख लिया। क्योंकि अल्लाह ने मुझे अपने रहने का ठिकाना बनाया है। तू ने मुझे देख लिया तो समझ ले कि अल्लाह को देख लिया। मेरी इबादत कर ली तो अल्लाह की इबादत कर ली मेरा तवाफ़ कर लिया तो गोया अल्लाह का तवाफ़ कर लिया। देख यह न समझ लेना कि मैं अल्लाह के अलावा कोई और हस्ती हूँ। अबु यज़ीद कहते है कि यह सुन कर मैं बग़ैर हजकिये रास्ते से वापिस लौट आया।"

बायज़ीद एक और जगह लिखते हैं "एक दफ़ा अल्लाह ने मुझे अपने पास बुलाया और फ़रमाया बुस्तामी! मेरे बन्दे तुझे देखना पसन्द करते हैं। मैंने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह! तू मुझे अपनी वाहदा नियत से नवाज़ दे और अपनी अहदियत तक बुलन्द कर दे। ताकि लोग मुझे देखें तो कह उठें कि हमने अल्लाह को देख लिया है। उस वक़्त तू ही तू हो और मैं वहां न होऊं।"

बा यज़ीद अपनी बड़ में यहां तक कह गए कि "मुसा अलैहि0 ने अल्लाह को देखने की ख्वाहिश की थी। मगर मैंने अल्लाह को देखने की ख्वाहिश कभी ख्वाहिश नहीं की। बल्कि खुद अल्लाह ने मुझे देखने की ख़्वाहिश रखी।" **(दअवत अल उस बुअिया–बहवाला नवाए इस्लाम–जौलाई–1990)**

बायज़ीद के ऐसे ख़्यालात व नज़रियात की बिना पर यह गुमान होता है कि वह 'फिरका बातनिया' से थे और 'तकिया' करके अहले तसव्वुफ के बीच एक अअला मकाम हासिल कर लिया था।

'वजूदी सूफिया' में तिलिस्मानी सबसे ख़बीस शख़्स था। वह शराब पीता था और 'मुहर्रिमात' को हलाल समझता था। वह कहा करता था 'मां बेटी और अजनबी औरत' यकसा है। उनमें हमारे लिए कोई हराम नहीं। जो लोग हराम समझते हैं, हम उनसे कहते हैं कि तुम पर हराम है।" तिलिस्मानी यह भी कहता था कि "कुरआन मुकम्मल शिर्क से भरा हुआ है। उसमें तौहीद का शाएबा तक नहीं। तौहीद तो हमारे कलाम में है।"
(माहनामा मुहद्दिस–सफा–8 शव्वाल–1410 हिजरी)

तिलिस्मानी की इस तमाम बकवास की जड़ 'तसव्वुफ' का यही ग़लत नजरिया है कि हर चीज़ अल्लाह है या कायनात की हर चीज यानि ज़र्रे–ज़र्रे में अल्लाह है। जबकि अल्लाह का कुरआन हमें एक नहीं सात जगह यह ख़बर देता है कि वह अपनी मख़लूक से अलग "अर्श पर मुस्तवी है।" **(आराफ–आयत–54 – युनुस–आयत–03 – रअद–आयत–02 – ताहा–आयत–05 – फुर्कान–आयत–59 – सज्दा –आयत – 32 – हदीद–आयत–04)**

'सुल्तानुल हिन्द' ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती 'कलमा तय्याबा' के यह मआनी बतलाते है। कि "सिवाए जाते वहदहु ला शरीक के दुनिया में कोई मौजूद नहीं है और मुहम्मद सल्ल0 मज़हरे खुदा है। पस तालिबे इलाही को

चाहिये कि अपने दिल में गैरूल्लाह का ख़्याल तक भी न आने दे और जाते खुदा वन्दी को ही हर जगह मौजूद समझे।" **(इसरारे हकीकी–हिस्सा अव्वल–सफा–7–8)**

'वजूदी सूफिया' का एक गिरोह' मजज़ूब' कहलाता है। यह बिल्कुल नंग–धड़ग रहते हैं। इसी हालत में आम लोगों के बीच चलते–फिरते है। कहीं भी पड़ जाते है। और कुछ भी खा लेते हैं। शरीअत पर अमल नहीं करते मगर आम लोगों की नज़र में 'फना फिल्लाह' का दर्जा रखते हैं। गोया सवा लाख के करीब अम्बिया अलैहि0 तो 'फ़नाफिल्लाह' के इस मर्तबे को न पंहुच सके। क्योंकि वोह सब लिबास पहनते थे और अहकामे शरीअत के पाबन्द थे।

इब्ने अरबी के शागिर्द मौलाना रूम के मलफूज़ात में उन का यह अक़ीदा देखने को मिलता है "कायनात से अलावा अल्लाह का असलन कोई वजूद नहीं। हक़ीकत व सबूत भी उसी वजूद को हासिल है जो मख़लूकात के साथ कायम है।" इसीलिए मौलाना रूम और इब्ने अरबी कहा करते थे कि "अल्लाह का देखा जाना मुहाल है। क्योंकि उसका ख़ारजी वजूद कायनात से अलग नहीं। अलबत्ता कायनात की हर चीज़ में उसका मुशाहेदा किया जा सकता है । इनके नज़दीक अल्लाह के लिए न कोई नाम है और न कोई सिफत। क्योकि जो चीज़ अलग से मौजूद ही नहीं तो उसका अलहेदा नाम या कोई सिफत कैसे मुमकिन है? **(अक़ीदा वह दतुल वजूद और इत्तेहादियों की तबाह कारिया)**

इब्ने अरबी और उसकी उसके हम ख्याल सूफिया चूंकि 'जहमिया' की तरह अल्लाह के अलेहदा वजूद और उसकी सिफात से इन्कार का अकीदा रखते हैं इसलिए इब्ने तीमिया रह0 के मुताबिक उनका कोई फर्द जब तक हिजाब के मरहले में होता है तो वह नसारा की तरह किसी हद तक इबादत कर लेता है। लेकिन जब हिजाब उठ जाता है और वह समझ लेता है कि वह 'खुद' अल्लाह है तो वह नेकी व बदी की बन्दिशों से आज़ाद हो जाता है।" **(अक़ीदा वहदतुल वजूद और इत्ते हादियों की तबाह कारियां)**

'वहदतुल वजूद' का यह बातिल फलसफा छठी सदी हिजरी में इब्ने अरबी ने मुदव्वन किया था। उसके बाद से लगातार बैसिर–पैर का यह नज़रिया तसव्वुफ की आगोश में फलता फूलता रहा। जुब्बा व दस्तार वाले पीराने तरीक़त इसकी पजीराई करते रहे। खानकाहें इन ख़्यालात का मर्कज़ थी। वहां से इस गुमराह कुन नज़रिये का निचोड़ शिर्क व बिदअत की शक्ल में अवाम में फैलता रहा।

हकीक़त यह है कि यहूद ने इस्लाम और मुस्लिम दुश्मनी में तसव्वुफ के प्लेट फार्म को बड़ी चाबुक दस्ती से इस्तेमाल किया और जुब्बा व दस्तार वाले कुछ बुजुर्गो की कोशिशों से इस्लाम का यह हाल हो गया कि गैर तो गैर अपनों की निगाहों में भी इसकी क़द्र घट गई और उनका ईमान व यकीन शक का शिकार होने लगा। यहूद अपनी चाहत की तकमील में पूरी तरह कामयाब रहे।

अल्लाह से दुआ है कि वह हमारी ख़ताओं व गुनाहों से दर गुजर करे और शिर्क व बिदअत से बचाकर अपने दीन की सीधी राह पर चलाए।

आमीन!

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
9887239649

माख़ूज़ से
इस्लाम, बिदअत व जलालत के मुहर्रिकात

9214836639